दिक्षाकर्म्मविधि
उड्डया

L.330
ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीगुरवे ॥ दीक्षाकर्म विधि ॥ पञ्चगव्यविय
ग्रादौ पूजागणेशस्य. निर्विघ्नेनैव कामया ॥ चाष्टपी०
नथा मक सिद्ध निर्विघ्न पूजनं ॥ पश्चाद्गं गुरोर्नत्रं च
गुरमंत्रं गुरमण्डलं ॥ विद्यापी० नथा चात्र मण्डलं मण्डलाकृ
ति ॥ पूर्व्वराजनयाय ॥ ग्रथादि ॥ श्रीसंवर्त्तोदवस्य ॥ सिद्धि
त्रमुक्तयालेख ॥ गुरुं पूजयेत् ॥ श्रीगुरवे ॐ इदमासनं न
मः ॥ पूर्व्वनमः ॥ नवपादार्घ हस्काघं. चन्दन. सिन्धूत्थ

समे वाग्रिकृदिक्षा प्रकाश

क्षापवीत पूर्व्व वाच्छादनं दद्यात् ॥ हस्कानादि मन्त्रेण गुरु
श्रीमच्चार्य गुरोरञ्जलिनमसि पूजयेत् ॥ षडङ्गन पूजयेत्
धूपदीप. जय स्कार्घं हस्कारञ्जलि ॥ ग्रस्त्रमण्डलाद्यादि
॥ ग्रस्त्रानलिमिनीधस्याद्यादि ॥ स्नानञ्चक्रिसमाकृतान
न्त्रमाला विलेपितं शुक्लिमक्लिप्रदानानं गुरुं वन्दे यथा
लिवं ॥ गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुदेवमहेश्वरः ॥ गुरुर्द

ॐ ब्रह्मगुरवे नमः ॥ गुरवे नमः ॥ गुरवे नमः ॥ परम
गुरवे नमः ॥ परात्परगुरवे नमः ॥ श्रीगुरुपादुकां पूजयामि
नमः ॥ ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः असिद्धसाध्यसेवितचरण
परमहंसाय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
वासुदेवेन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
सदाशिवेन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
मधुसूदनेन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
विश्वेश्वरेन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
परमशिवेन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंस
परिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्ति
शिवाभिनवनृसिंहभारतीन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं
सौः परमहंसपरिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षि
णामूर्तिशिवाभिनवनृसिंहभारतीन्द्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
क्लीं ऐं सौः परमहंसपरिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय
श्रीमद्दक्षिणामूर्तिशिवाभिनवनृसिंहभारतीन्द्राय नमः ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंसपरिव्राजकाचार्याय सर्वतन्त्र
स्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्तिशिवाभिनवनृसिंहभारतीन्द्राय
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं सौः परमहंसपरिव्राजकाचार्याय
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राय श्रीमद्दक्षिणामूर्तिशिवाभिनवनृसिंह
भारती

मं॥ ब्रह्मकं त्रिचाकुलमेका कानुवर्तनं॥ गन्धपादो
दकं गन्धगन्धमहिसवटवा॥ गन्धवासिरुवंकाभीग
न्धवाक्षीपयमंपदं १३ ॐ तिगन्धस्तोत्रं घनामद क्षि
ना॥ अथ गन्धलेपमंत्रकुलीकालयत्॥ सूर्यार्घ॥ चन्दना
क्षपृष्पोदकनघ्रा क्षमी॥ मन्त्र॥ सौं गन्धायकल्पं॥ त्रिधा
नासाकनघ्रायं॥ ॐ गंधर्वकेटकमटन एचिंगासिवसुन्ध

ना॥ नदोषनामनार्थयसिक्षमिगन्धवानिल्ला॥ हस्तप
मानेचपुनर्थमंत्रकुलीकायंयं॥ एलाधिनापृथ्वीवीत्येव
लेपिनागन्धवानिल्ला॥ पूर्वजन्मकृतंपापंदुष्कृतंसुकृ
तंतथा॥ ॐ हजन्मनियापानिनोहिजन्मीनयेंखच॥
कनपृष्पाक्षिलिक्तलाग्रामयंकनचेनसा४॥ अखण्डम
लुलाद्यलिंगग्रीवाग्रप्रलम्बयं॥ पूष्पचविविधाकानाः

ज्ञायम विश्वकुले ॥ तस्मैं क्ष्म्यान्दवनक्षुधिवस
र्वम ४ ॥ ॐ वल्लाहादैंथ्थ्थलैमन्त्र ४ ॥ लाहिलैं ॥ श्रीसैव
र्ल्रीं ॥ श्लैं श्रूनक्षमण्डलायनम ४ ॥ श्रूनक्षमक्षेत्रपुष्पम
ण्डलमध्येधयम ॥ नेतुंयाडनपाठवासनचोय्यायं
हालैं ॥ पिथ्थ १० ॥ दथ्थ ॥ दूथ्थ ७ ॥ दूथ्थ ३ ॥ कंवावीयच्च
तसिंध्रुंजंजमकाजीनास्वानतवस्यवाञ्छादनताद

मूलदक्षिणाथतंतय
लैंश्रींद्रायनम ॥ नैंश्रूत
यं २ ॥ स्लैंयर्म्मा २ ॥ क्लैं
नैमत्यायं २ ॥ वूंवरूना
यं २ ॥ स्रूंवायूव्यायं २ ॥
स्रूंकूवेनायं २ ॥ क्लूं श्रीं

ज्ञानाय २ ॐ ऊर्द्ध च्छन्दाय २ हुँ ऊर्द्ध च्छन्दाय २ ॐ ह्रीं
ज्ञयाय २ २ विज्ञयाय ॥ २ ॐ ह्रिं नाय नम ॥ २ ॐ प्रा
ह्रिं नाय ॥ २ ॥ २ ज ह्न्यै २ ॥ २ स ह्न नी २ ॥ २ ॐ आकर्षणी २
॥ ॥ ॐ पूर्व क्राय २ ह्रीं द ह्रिं ण वक्त्राय २ ॥ सौं ठ ल न व
क्त्राय २ ॥ ॐ पश्चि म वक्त्राय २ ह्रीं सौं ऊर्द्ध वक्त्राय २
ॐ अग्नि मण्डलाय २ ॥ ह्रौं सूर्य मण्डलाय २ ॥ सैं ४ सोम

मण्डलाय ॥ कँ ज हुँ ७ सँ ४ श्रीगुरुमण्डलाय २ ॥ धू प
दीप अलिवलि नैवद्यं नमः ॥ अर्घविय ॥ पुष्प अक्ष
त ताम्बूल दूग्ध गन्ध जल ल अलिवलि थ ण ीस्व स
य ॥ अर्घोयं दवदं वलि पूर्व थमम ताज्ञि नि ॥ गृह्ण
नार्घमया दक्त घ्नोदयन मस्त्वी ॥ मंडल दृय के ग्
यातु निसलनि नृ य ॥ ण ीस्व अर्घाम स्व याय ॥ पूनम

ल्तुल दक्षिणा हस्त नधृत्वा॥ वाम हस्त नगृह्य पुष्पं द
त्वा॥ ॐ काय स्वाहा सन्न नमस्तु॥ वाक्‌ स्वाहा वाक्‌ सन्न
नमस्तु॥ चित्त स्वाहा सन्न नमस्तु॥ काय वाग्मन सर्व
मन त्वमव सन्न नमस्तु॥ ॐ त्रिधा पुष्पं दत्वा॥ क्षमा
स्तुति॥ त्वं गति सर्व देहानां सिद्धि मे सच्चा चरे क्षम
स्व मन हानी दृष्ट्वा त्वं पन मम्व न॥ पुन पथित्वा॥ ब्र

नामी कृत्वा॥ सर्व षीद [illegible] त्वा॥ मस्तुल नमस्कार्न म
स्तुल सोत्र॥ मङ्गलायन [illegible] त्वा सर्व न त्वा धिपाय च॥
ह्रस्व वः स्त्व ः स्त्व रूपाय. वि स्त्व रूपाय न नमः॥ क्रिया
लोपन कर्त्तव्यं मम काय ॐ सिद्धये॥ क्षमा तो गुरु
वस प्रश न्तो स्तु गुरवे नमः॥ ॐ खस चोद स्त्वा नेकृय
॥ मस्तुल विसर्जनं मस्तुल चोद स स्त्वा न गुरु ल व क्लाय

আশা গ্রন্থাগার
1330
ASHA ARCHIVES

पु एणनिसन ॥ संनषु ॥ तसा ॥ दा
पु र्हसि मे. नाथ दीक्षादा मयु कृ मं ॥ दक्षानुग्रह
पुत्र ॥ प्रसन्नेन चक्षसा ॥ गृहाण्ण ॥ षसा दा ॥ ॐ
॥ प्रसादतः ॥ ॐ वंमस्तु गृह्णी ॥ मंगल वि
सर्जनी ॥ संहारमुद्रा ज्ञानध्याय ॥ मध्यसक्षि ॥ मत्रकाया व
वियगत्र ॥ आत्मविद्यशिवतत्वे सप्रसीदास्तु ॥ सर्वेषु

मे तात.

सर्वपूज्यलिंगनिघ्रनामे ॥ निर्माल्यपूष्पे ॐ ब्रह्मनसेन
॥ निर्माल्यपूष्पे पूजयेत् ॥ कुं निर्माल्यचक्षुनायनम ॥ ह्रं
क्षप्रक्षालयेत् ॥ ॐ निगमागम्ल्ल्य पूजाविधि ॥ ॥ तत्व
लिंगाभ्यधने ॥ पाद्यके ॥ नक्रर्ल्वी २ घ्राणेश्वकीथग
नेपि ॥ ब्रह्मरुद्रायुग ॥ स्त्रीरुद्रा ॥ नुयुगी ॥
वमन्त्रकोणेश ॥ केवुजेत् ॥ लमपनामेव

दिव ६८

शेषवोन

ग सिद्धि ग्रमपनादेवा प्रिय ॥ ग्रमपनाम्च ग योगी ग
स्माच्चागम ग्रमपयत् ॥ यँत्रँलँवँरँ ॥ स्थान ग्रवस लेख ग्रया
व रेख व न ग्रपन पेत् ॥ ग्रव ह्रा स ग ग्रा व रेख व न सा दृ काय
रेख व ग्रे या व ग्रव न पिकाय ॥ थ ले रेख व सव ग्रञ्जि लोस
ना य ॥ ग्रः ग्रस्त्राय हृद् ॥ ग्रथ ह्रद स ङ्गि ः ॥ हस्त प ग्रा
लेख न हृाय ॥ वेद न स्व स्ति क चाय सि द्ध या ला ह्रा ग्रि से चे

दना दिनय ॥ दक्षि ना नय ॥ नासिय ॥ ग्रस्त्र नमस्का न
न्यास ॥ ग्रर्घ्यपात्र ग्रर्घ्यपात्र पूजा ॥ ग्रात्मपूजा ॥ देव यादी
न ग्रासनान नी ॥ ग्रा धार शक्ति ग्रा दि ॥ ग्रा गुरु देव
ग्रो ॥ ग्रो ग्रमन्त्र न प्रियो ग्रो ग्रीमूलें ॥ धूप दीप ग्रालि व
लि नैवेद्य ग्रीं नमः ॥ ग्रप ग्रोत्र ॥ माया कुल्च नि ॥ ग्रीं ह्रा न
मुद्रा विसर्जनी ॥ पादादि ग्रा नप र्यन्त पृथिवीस्था नी

चतुरस्रे पीतवर्णं वसुदेवं नमस्कृत्य लँ वीजं ध्यायेत् ॥ जान्वादीनाभिपर्यन्ते ॥ अपस्तत्त्वं धनुषाकारं अ
मूलवर्णं विष्णुं देवं नमस्कृत्वा वि ज ध्यायेत् ॥ नाभ्या
दिकण्ठपर्यन्ते वज्रस्थाने त्रिकोणाकारं त्रैलोक्यवर्णं रुद्रं
देवं त्रँ वीजं ध्यायेत् ॥ हृदयादिकण्ठपर्यन्ते वायुस्थाने ष
ट्कोणाकारं हरितवर्णं महेन्द्रं देवं नमस्कृत्य यँ वीजं

ध्यायेत् ॥ कण्ठादिललाटपर्यन्ते आकाशस्थाने स
र्वलिवं देवं धूम्रवर्णं ॥ वर्तुलाकारं नमस्कृत्य हँ वीजं
ध्यायेत् ॥ पृथिवीस्थानमधिकृत्य लिखेत् स्थाने पादुकां ॥ आ
पतत्त्वाधिकारे विन्दुस्थाने पादुकां ॥ तेजस्तत्त्वाधिकारे
हृदयपादुकां ॥ वायुतत्त्वाधिकारे नासिकास्थाने पाद
कां ॥ आकाशतत्त्वाधिकारे मूर्द्धस्थाने पादुकां ॥ ब्रह्म

पूजयामि तर्पयामि नमः

त्वाधिकारे ज्ञानहृदयपादुकां ॥ विष्णुतत्वाधिकारे पा
दहृदयपादुकां ॥ रुद्रतत्वाधिकारे हृस्कहृदयपादुकां ॥ मू
हृस्कानां ॥ शिरवासाधयत्पृथिवीतत्वाय नमः ॥ आधार
शक्तितत्वाय २ ॥ लिंगं ॥ जलतत्वाय २ ॥ नाभौ ॥ वायूतत्वा
य २ ॥ हृदि ॥ आकाशतत्वाय २ ॥ कण्ठे ॥ ब्रह्मतत्वाय २ ॥ आ
ज्ञा ॥ विष्णुतत्वाय २ ॥ पादौ रुद्रतत्वाय २ ॥ हृस्कानां शिर

हृस्कानां सिद्धसाधयत ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॐ २ ॥ ह्रूं वसिनी
वाग्देवतायै नमः ॥ शिरसि ॥ २ ॐ ह्रीं कां मन्थनी
वाग्देवतायै २ ॥ ललाटे ॥ २ ॐ ह्रूं मा दीनीवाग्दे
वतायै २ ॥ ऋमध्ये ॥ २ ॐ ह्रूं विमलावाग्देवतायै २ ॥
कण्ठे ॥ २ ॐ ह्रीं अरुणेत्यवाग्देवतायै २ ॥ हृदये ॥ २
ॐ ह्रूं जयनीवाग्देवतायै २ ॥ नाभौ ॥ २ ॐ ह्रीं सर्व
ह्रूं

अथ श्रीवाराह्यवतायै २ ॥ आधार ॥ ३ ह्रौं ॐ ह्स्त्रीं कौलिनी
वाराह्यवतायै २ ॥ पाद ॥ ३ ह्रीं क्रीं सौः ४ क्रीं मूलचक्र का
मगिर्य्यालय श्रीमित्रीशनाथात्मि आकेश्वरीका सहज
श्री देवी ब्रह्मात्मशक्ति ४ श्रीपादुकां ॥ आधार २ ह्स्त्रीं सू
र्य्यचक्रजलंधरपी० श्रीषष्ठीशनाथात्मिके श्रीवज्रेश्व
रश्री देवी विष्णात्मशक्ति ४ श्रीपादुकां ॥ हृदि ॥ ५ ॥

३ ह्सौं सोमचक्र पूर्णगिरिपी० श्रीउड्डीशनाथात्मि
के श्रीहरसिद्धिनी देवी ब्रह्मशक्ति ४ श्रीपादु
कां ॥ भ्रूमध्ये ॥ ३ कैं ऊं हुं सः ४ ब्रह्मचक्र ओड्याना
पी० चर्य्यीनाथात्मीकेश्वरी महाशिपूतस्तनी देवीपर
ब्रह्मात्मशक्ति श्रीपादुकां ॥ ब्रह्मरंध्रे ह्रीं आत्मतत्व
व्यापिकाये श्रीपुत्रनाथैनम ॥ आधार ॥ ह्रीं ॥ ह्सौं विश्वा

त्वव्यापिकायै श्रीपूजायै नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं त्वव्या
पकायै त्रिपूजायै नमः ॥ ॐ सं धं ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं ह्रीं स
र्वत्वव्यापिकायै श्रीपूजायै नमः ॐ वक्त्रं ह्रीं ह्रूं ह्रीं ॐ
ॐ तिष्व धनं ॥ सापनमन्त्रकान ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रीं ॐ सूत्रेपा
नयत्स्वाहा ॥ वीजर्जनादि श्रीत्वत्वन समयलोय त्रि
ष्यपानन्यायवे को ॥ ॐ तिदीक्षाकर्म्मसमाप्तं ॥ शुभं ॥ ॥

१अथमन्त्रप्रदान ॥ आदौस्नानसंध्यापूजीकारयं ॥
पश्चात्सिद्धसाधनं ॥ धूपदुःखमर्दनाय ॥ अर्घ्यानमन्त्र
अर्घ्योत्तोस्तु २ ॥ मूलमन्त्रेनजप १० ॥ क्रमनमन्त्रदानं ॥
दिव्यानुक्रमनपूजनं ॥ ॐ तिमन्त्रप्रदानविधि ॥ पून
श्चतुदिनपर्य्यंतन्यासजपमाद्रकारयत् ॥ पश्चात्पूजी
कारयत् ॥ ॥ श्रीगुरुसिद्धिरस्तु ॥ ॥ लिवलिव

दिक्षाकर्म्मोवि
विधया

L 330
ASHA ARCHIVES